जंगल

जंगल

फिर एक छोटे बहादुर चूहे ने अपनी यात्रा शुरू की. उसने अपने घर की सुरक्षा को छोड़कर जंगल खोजने का अपना मन बनाया. उसने वहां जो कुछ अनुभव किया उसे उसकी पहले से कोई उम्मीद नहीं थी.

यह पुस्तक छोटे बच्चों को अंधेरे से निबटने में मदद देगी.

मुझे हमेशा अँधेरी और अनजानी जगहों से डर लगता था. शायद इसीलिए मुझे जंगल से भी डर लगता था. रात में सोते समय मैं अक्सर इन स्थानों को सपने के देखता था और फिर डर के मारे पसीने से लथपथ उठकर बैठ जाता था. दिन में भी मुझे डर लगता था. मैं जो कुछ भी करता या कहीं भी जाता उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता था.

एक रात मुझे इतना भयानक डर लगा कि मैं उसे सहन नहीं कर पाया.

सुबह मैं अपने घर के दरवाज़े में खड़ा था.
मुझे अलाव के पास गर्म पलंग, आराम कुर्सी
और मेरी मनपसंद चीज़ें दिखाई दे रहीं थीं.
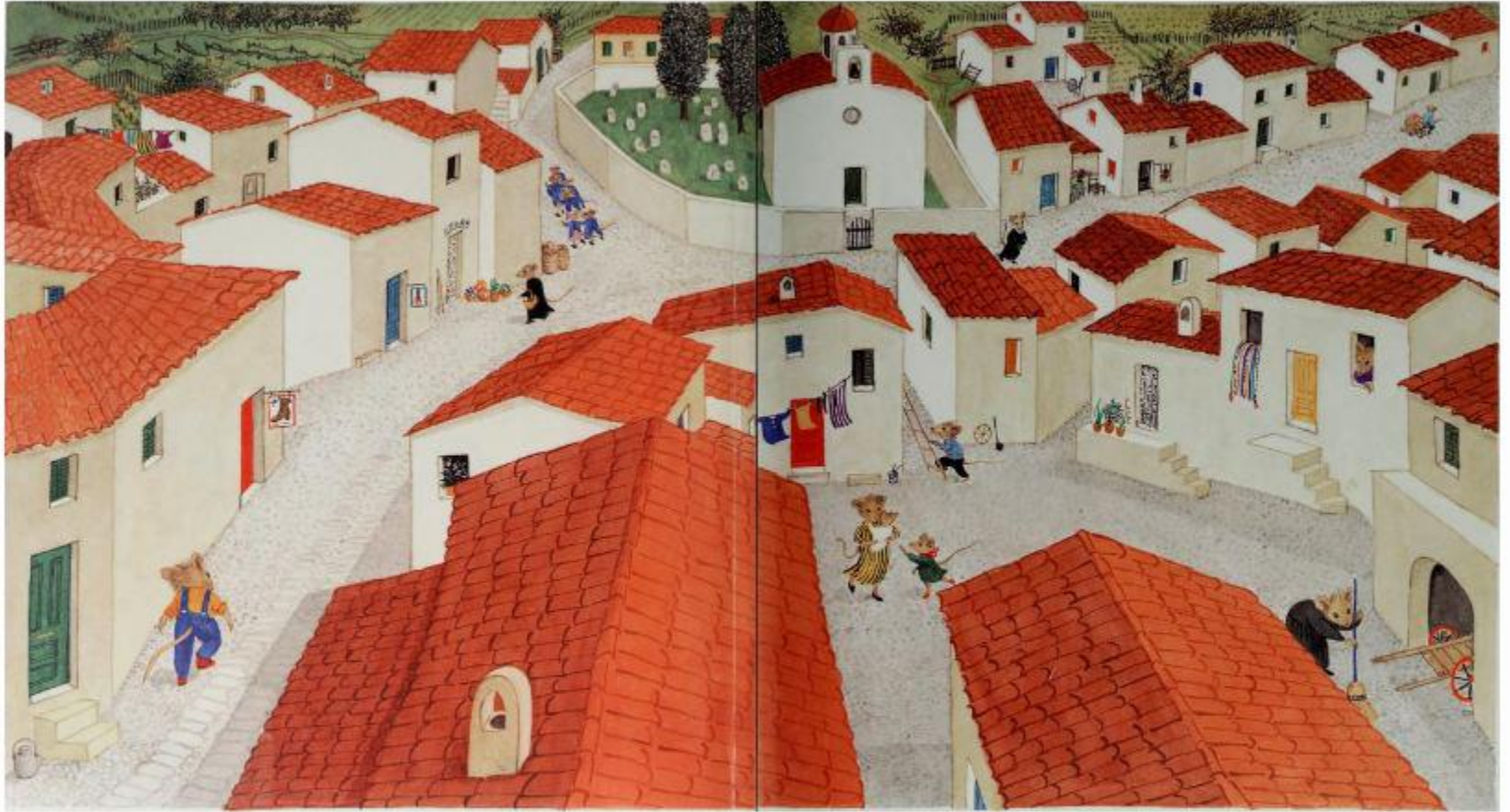
मैंने दरवाज़े का हैंडल घुमाया और फिर बाहर जाकर अपने पीछे दरवाज़ा बंद किया. फिर मैं गांव के बीच में से चलता हुआ आगे बढ़ा. मैं गांव के एक-एक चप्पे को अच्छी तरह जानता था.

मैं अपनी चिरपरिचित दुकानों के बीच में से गुज़रा और मैं एक टेढ़ी सड़क पर आगे बढ़ता गया.

मुख्य सड़क पर पहुँचने के बाद मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा. मुझे अब कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था. मैं खुद को इस बड़ी दुनिया में बहुत छोटा महसूस कर रहा था.
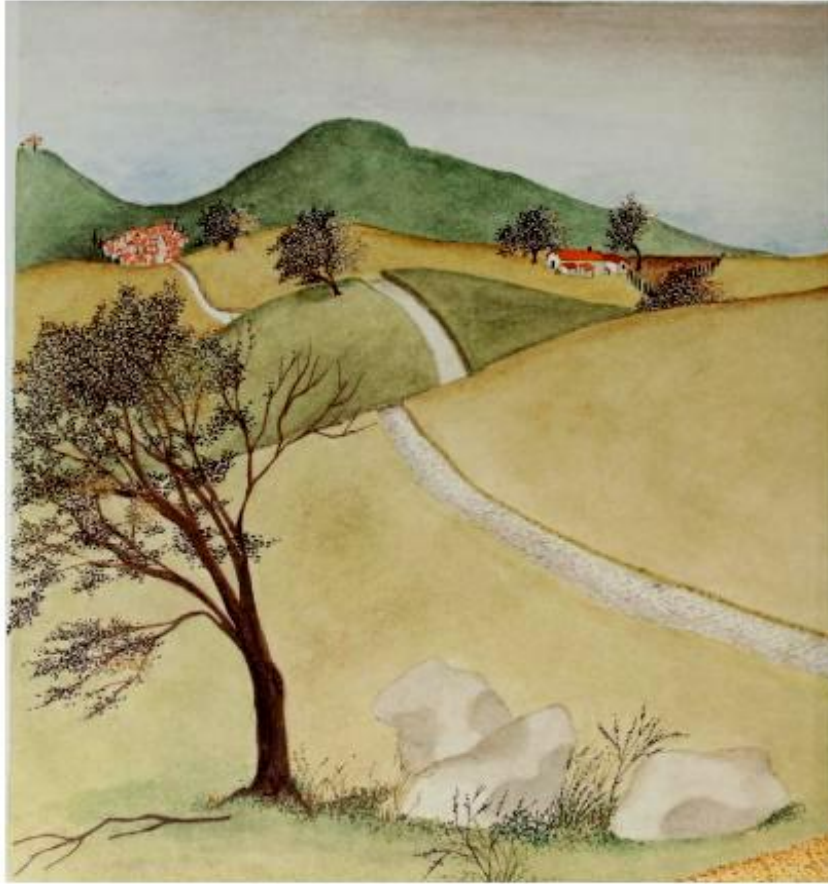
उसके बाद मैं आगे बढ़ा और अनजाने लोगों के खेतों और खलिहानों के सामने से होकर गुज़रा. फिर आगे सड़क ही नहीं थी.
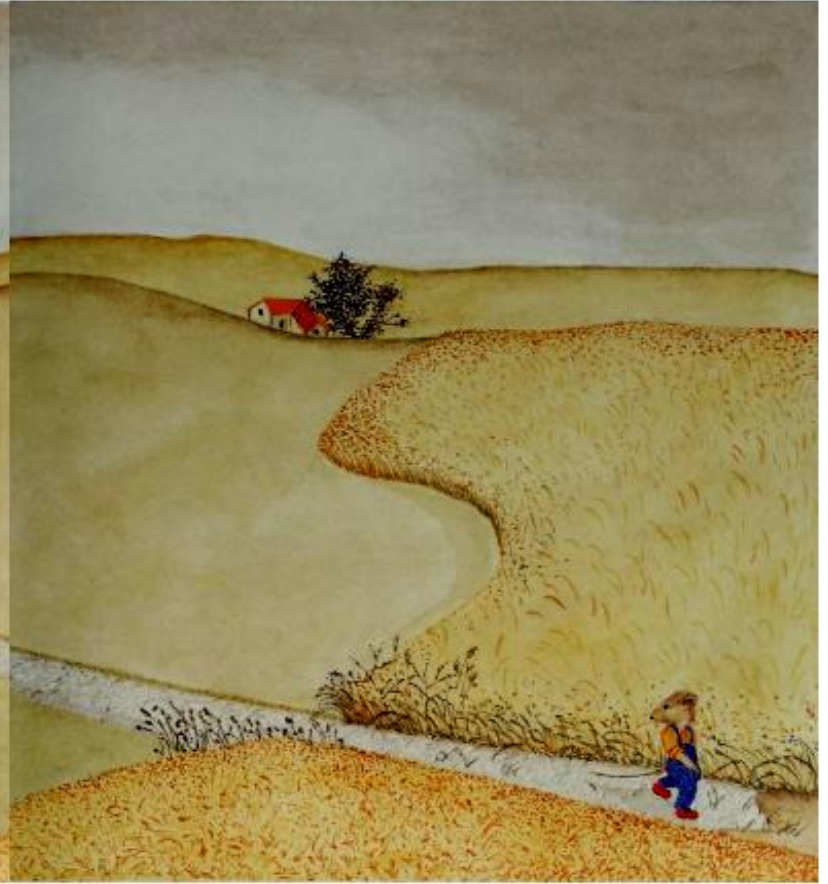
फिर मैंने बड़े उदास मन से पीछे मुड़कर अपने गांव को देखा..... वो दूर महज़ एक बिंदु दिख रहा था.
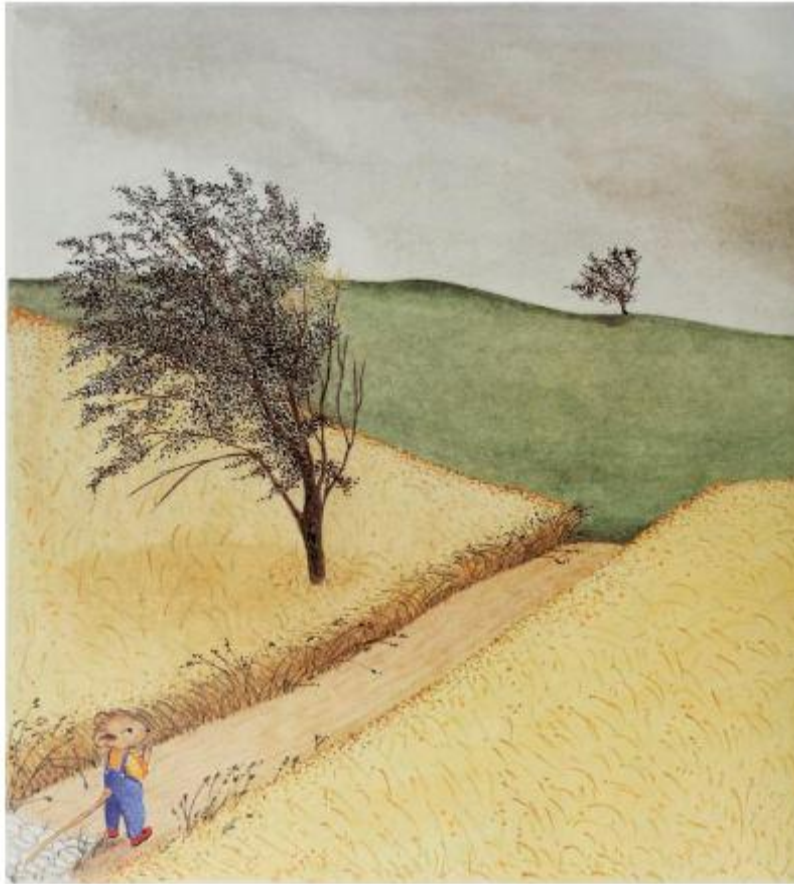
मेरे सामने बहुत सारे विशाल पेड़ हवा के झोंकों में अपने सिर हिला रहे था. आगे जंगल था.
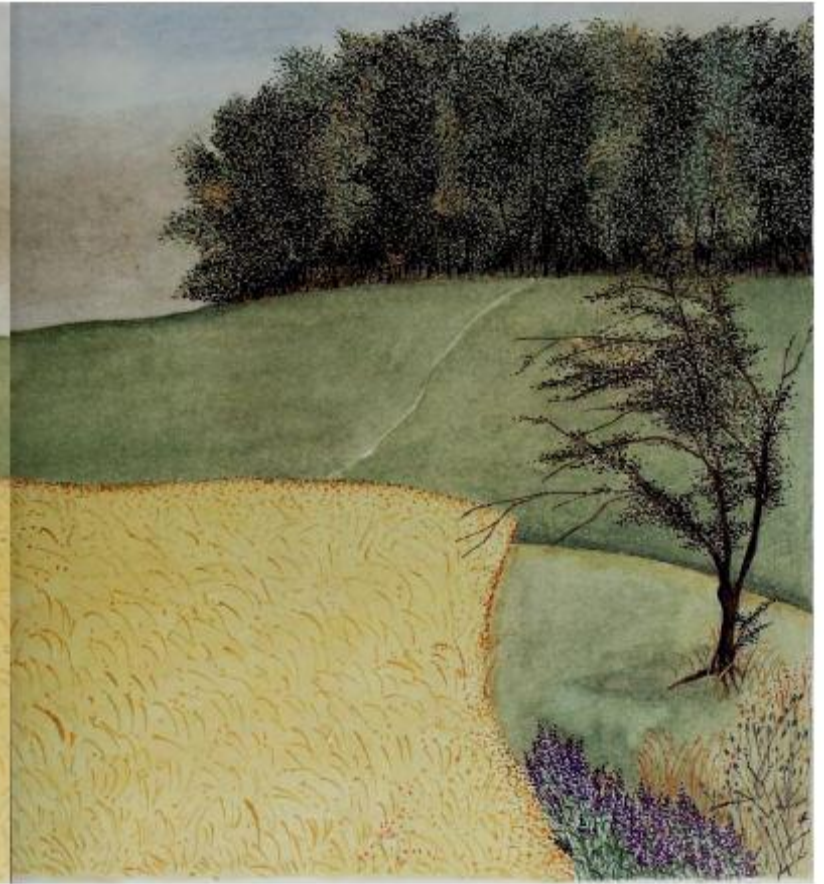
क्या मैं पीछे मुड़ूं? क्या मैं पीछे मुड़कर अपने घर की सुरक्षा में वापिस जाऊं?

नहीं, मैं अब काफी आगे आ चुका था.

मेरे मन में डर था.

कहीं मैं जंगल में खो तो नहीं जाऊँगा?

जंगल में कोई जंगली जानवर मुझे खा तो नहीं जायेगा?

मैं वहां कहीं डर से मर न जाऊँ?
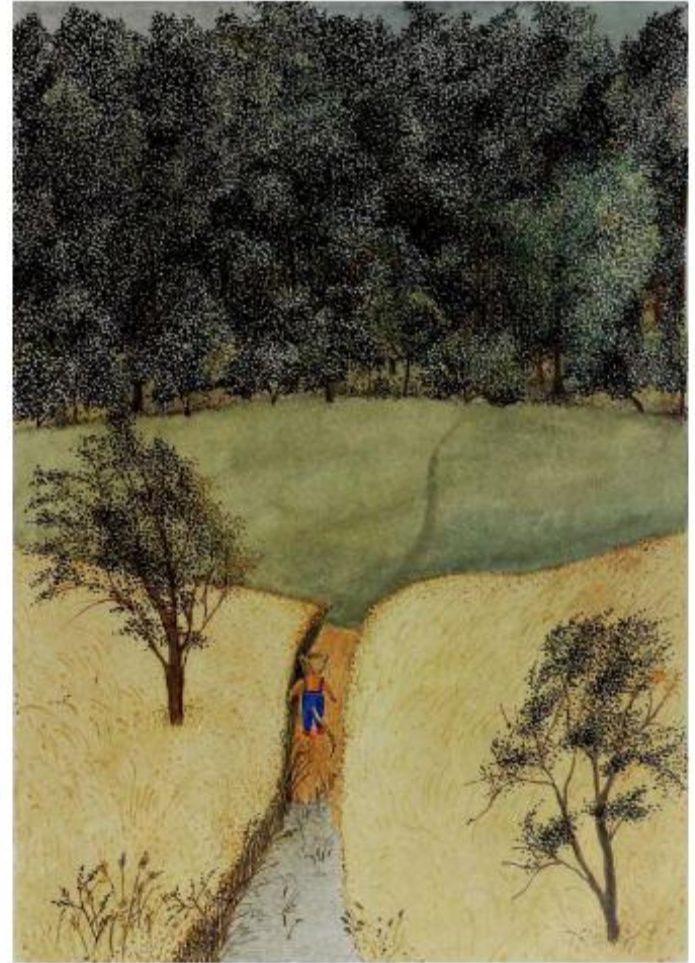
फिर मैंने जंगल के अंदर अपना पहला कदम रखा. मैं दो बड़े पेड़ों के बीच में से होकर आगे बढ़ा. वे दोनों पेड़ जंगल के द्वार जैसे खड़े थे.
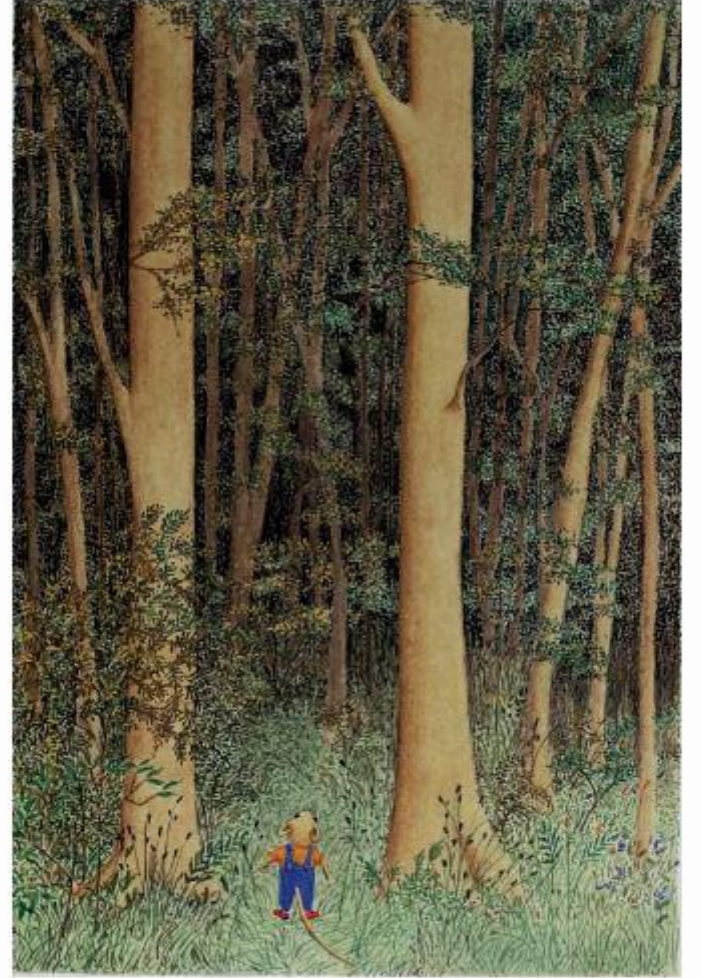
मेरा दिल धक-धक कर रहा था. पीछे से एक चिड़िया की तेज़ आवाज़ सुनकर मैं डर के मारे कूदा पड़ा. मुझे पास में किसी चीज़ के चटखने की आवाज़ आई और फिर एक काली परछाई तेज़ी से मेरे सामने बहुत करीब आई. डर के मारे मैं कूदा. मेरा पांव किसी चीज़ में फंसा और फिर मैं धड़ाम से ज़मीन पर गिरा!

"चुपचाप लेटे रहो," मैंने सोचा. "अगर तुम रोए-चिल्लाए तो कोई तुम्हें ज़रूर ढूंढ निकालेगा." मेरे दिल की धड़कन दूर तक सुनी जा सकती थी.

जब मैंने अपनी आँखें दुबारा खोलीं तो मेरी नाक काई में धंसी थी. काई एकदम मुलायम थी, वो कोमल पंखों जैसी मुलायम थी. सूरज की धूप पेड़ों के पत्तों से छन-छन करके मेरी पीठ को गरम कर रही थी. हल्की हवा के झोंके मेरे शरीर के बालों को हिला रहे थे.

मैं अभी भी ज़िंदा था!

मैं कितनी देर से वहां था?

फिर एक तितली किसी परी जैसे अपने पंख फड़फड़ाते हुए मेरे पास आई.
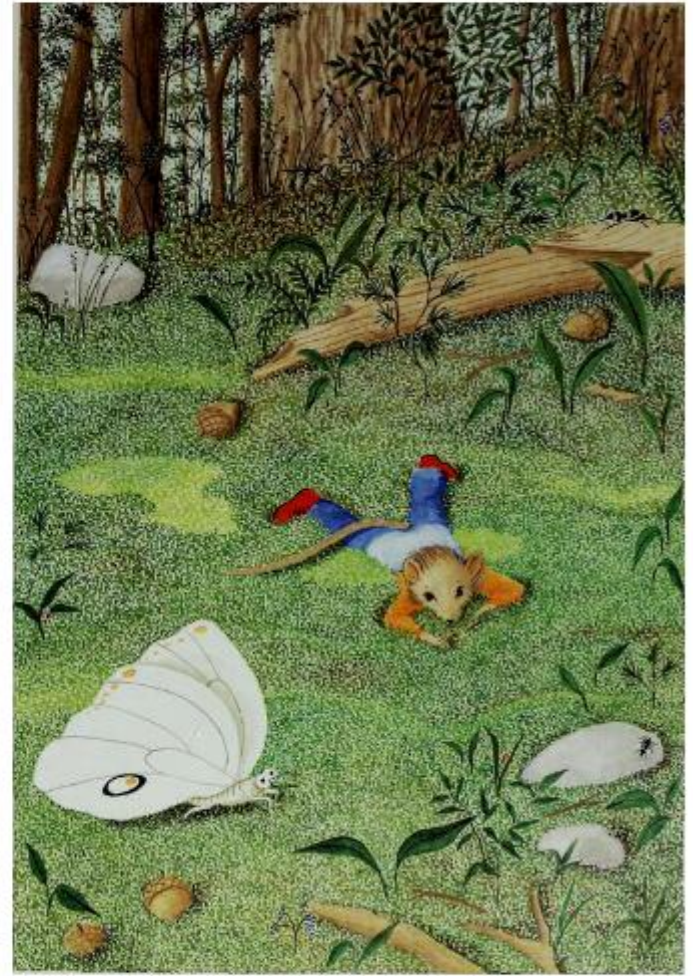
मैंने अपने आसपास की आवाज़ों को सुना. लाखों पत्तियां हवा में हिल रही थीं और कुछ फुसफुसा रही थीं.

मैं उन पत्तियों पर खूब लुढ़का. फिर मैंने करवट बदली और पहली बार ऊपर देखा.

सबसे ऊपर मुझे आसमान दिखाई दिया.
आसमान, जंगल से कहीं बड़ा था.
आसमान, मेरे डर से भी ज़्यादा बड़ा था.
वो शायद हर चीज़ से बड़ा था.
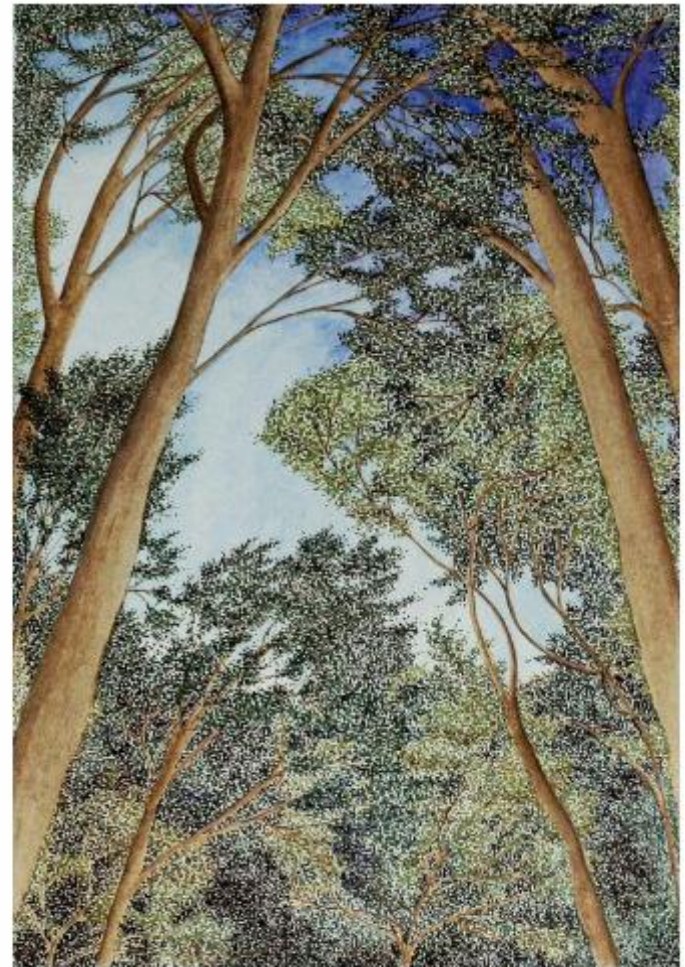
मैं वहां काफी देर लेटा रहा और वहां
की अदभुत सुंदरता को निहारता रहा.
फिर अंत में रोशनी कम होने लगी.
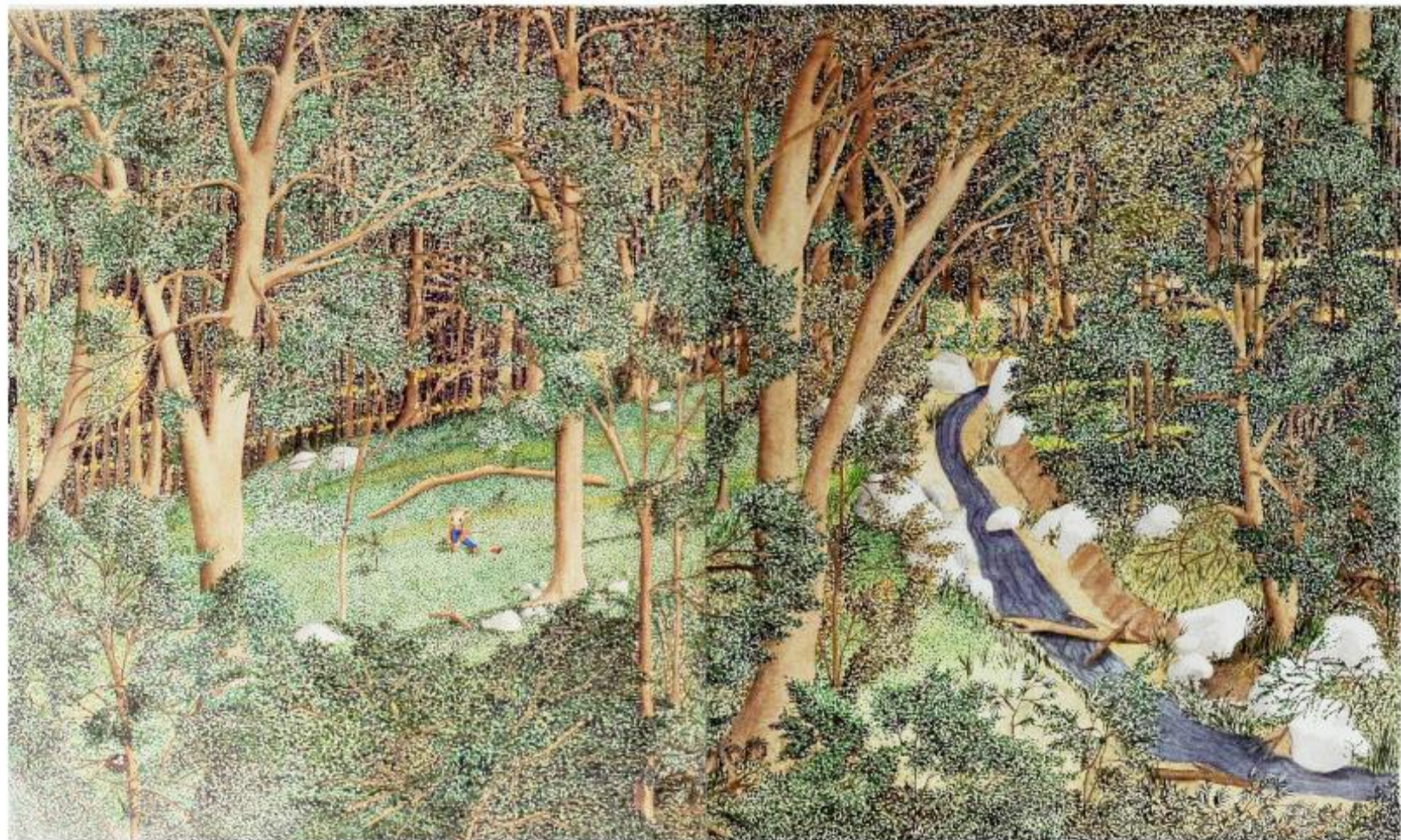
उसके बाद जंगल की अनूठी सुंदरता को अपने यादों में संजोए हुए मैं धीरे-धीरे चलते हुए वापिस घर लौटा.

अंत